

वेब आधारित तकनीकों का पानी-पर्यावरण के लिए समाज-शिक्षण में योगदान (केस-स्टडी : इंडिया वाटर पोर्टल-हिंदी)

मीनाक्षी अरोड़ा (सह लेखक-केसर सिंह)

यमुना रीवर कीपर, दहरादून, उत्तराखण्ड।

सारांश

इंटरनेट और मोबाइल टेलीफोन का जैसे विस्तार हो रहा है वैसे ही विकास के इस दौर में समुदायों के बीच सूचना प्रौद्योगिकी विशेष-कर वेब टेक्नोलॉजी का प्रयोग बढ़ रहा है। इसके प्रयोग से जल साहित्य विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता, जवाबदेही और जन सहभागिता को बढ़ावा मिला है। हालांकि हम अभी भी आईसीटी के विकास में संभावित योगदानों को समझने के शुरुआती दौर में हैं। फिर भी शुरुआती सफलताओं में वेब आधारित सूचना क्रांति ने समाज के विभिन्न वर्गों में ज्ञान के आदान-प्रदान को बहुत सुगम बना दिया। स्कूलों, कॉलेजों तथा उच्च शैक्षिक संस्थानों के वेब-एडेड शिक्षा, सुदूर शिक्षा, ई-लर्निंग, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा अनुसंधान से पानी पर्यावरण की शिक्षा जागरूकता में काफी परिवर्तन हो रहा है।

जल और पर्यावरण पर पहले से ज्यादा जानकारी विभिन्न वेब पोर्टलों के माध्यम से समाज के विभिन्न तबकों तक पहुंचाई जा रही है। प्रस्तुत शोध पत्र इस बात का अध्ययन करेगा कि सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सअप) जैसे माध्यम कैसे जल और पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान दे रहे हैं।

मैकिन्सी¹ के अनुसार विश्व के सर्वाधिक इंटरनेट वंचित लोग भारत में ही हैं। अगर एक बड़ी आबादी इंटरनेट से जुड़ जाती है और इस माध्यम का प्रयोग उसके साथ सीधे कनेक्ट करने के लिए किया जाता है तो उसके परिणाम कितने विस्मयकारी हो सकते हैं, इसकी कल्पना मात्र ही रोमांचित कर देती है।

इंटरनेट को दोतरफा संपर्क, आग्रह और डिलीवरी के माध्यम के रूप में इतनी बड़ी आबादी तक ले जाया जा रहा है, इससे ई-शिक्षा और पानी-पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में काफी बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

शोध पत्र इसका भी अध्ययन करेगा कि कौन-कौन से मुख्य वेब पोर्टल भारत के बारे में जल और पर्यावरण संरक्षण संबंधी ज्ञानाधारित सामग्री उपलब्ध कराते हैं और साथ ही कुछ के तुलनात्मक प्रभावों का भी अध्ययन करेगा। केस स्टडी के रूप में हिंदी वाटर पोर्टल, जिसकी विजिटरशिप दो मिलियन² मासिक से भी ज्यादा है, की सामग्री, संचार के तरीकों, समाज में पहुंच सामग्री के उपयोग और प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि ऐसे वेब माध्यम जल और पर्यावरण संबंधी समस्याओं से निजात पाने और उत्तम प्रबंधन में किस प्रकार और कितना योगदान दे रहे हैं, बाढ़ प्रबंधन से लेकर अकाल-सूखे में लोगों तक जानकारी देने में मदद कर रहे हैं।

मुख्य शब्द-पानी-पर्यावरण शिक्षण, वेब मीडिया, वातावरण, मीडिया, वेब टेक्नोलॉजी

Abstract

Since the popularization of the Internet and mobile telephony, there has been rising interest in the development community to use information communication technologies (ICTs); especially web based technologies. The use of ICTs have improved transparency, accountability, and public participation within many sectors, including water an environment. Even though we are still in the early stages of understanding what ICT can really do for development, a number of initial successes have shown ICT to enable the rapid transfer of knowledge to segments of society that were previously without.

Web-aided education in various schools, colleges and higher education institutions, distance education programmes, E-learning, training and research programmes are making a big change in awareness and education about water and environmental issues.

Various web portals are providing now far more information on environmental issues to a large segment of society. Present paper will try to find out how social media (Facebook, twitter, WhatsApp; etc.) is playing its role in water and environmental education and conservation.

The internet is being taken to such a large population as a means of two-way connectivity, solicitation and delivery, it is seeing huge changes in areas like e-education and water-environment.

Paper will study that which major web portal are providing educational contents on water-environment conservation and Will also study comparative effects of some. As a case study, an effort will be made to highlight the content, methods of communication, accessibility in society, use and impact of the content of Hindi Water Portal, whose visitor-ship is more than two million monthly. And how and how much they are contributing to get rid of environmental problems and good management, from flood to famine-drought management.

Because the India Water Portal Hindi is understood as one of the most successful examples of a knowledge portal within the Indian water sector, it offers ample opportunity to learn more about this emerging approach to development, which uses ICTs to pursue developmental aims, will try to understand this with further facts and data..

Key word: water-environment education, web media, web technology

परिचय

वैसे तो पानी-पर्यावरण के प्रति व्यवहार की शिक्षा व्यक्ति के जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है। पानी-पर्यावरण के प्रति व्यक्ति के शिक्षण का काम परिवार के भीतर से शुरू होकर आजीवन जारी रहता है और यह पानी-पर्यावरणीय शिक्षण-समझ का काम किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के लिए औपचारिक शिक्षण संस्थानों तक सीमित नहीं हो सकता है। व्यक्ति अपने सामाजिक ताना-बाना, नदी-त्योहारों, स्थानीय वातावरण के माध्यम से भी पानी-पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्राप्त करता रहता है।

इस संदर्भ में, पानी-पर्यावरण शिक्षण में वेब-मीडिया एक महत्वपूर्ण उपकरण हमेशा से रहा है। पानी-पर्यावरण के मामले में प्राथमिक स्कूल एक अर्ध-नियोजित शिक्षण प्रदान करते हैं। साथ ही उच्च शिक्षा संस्थानों में भी पानी पर्यावरण शिक्षण पर्याप्त नहीं है, कहने को तो पानी-पर्यावरण के काम में बड़ी संख्या में संगठन लगे हुए हैं, फिर भी उनकी पानी-पर्यावरण शिक्षण गतिविधियां समय काल स्थान की सीमाओं में बंधी और अपर्याप्त ही है।

इस अध्ययन का उद्देश्य 'वेब आधारित तकनीकों को पानी-पर्यावरण के लिए समाज-शिक्षण में योगदान को समझना है। पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के संदर्भ में वेब आधारित तकनीकों के योगदान को मूल्यांकित व रेखांकित करना है।

शोधार्थी के रूप में यह देखना चाहते हैं कि निम्न संदर्भों में क्या वेब आधारित तकनीकों से बदलाव हासिल हो रहा है ?

- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक-पर्यावरणीय निर्भरता के बारे में स्पष्ट जागरूकता और चिंतन को बढ़ावा;
- प्रत्येक व्यक्ति को पानी-पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए आवश्यक ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण, प्रतिबद्धता और कौशल प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना;
- पर्यावरण के प्रति समग्र रूप से व्यक्तियों, समूहों और समाज के परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार परिवर्तन व्यवहार के नए पैटर्न बनाना।

भारत में वेब-तकनीक का प्रारम्भ

भारत में इंटरनेट का जन्म 15 अगस्त, 1995 में हुआ था। तब से लेकर उपयोगकर्ताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। पानी-पर्यावरण शिक्षण के क्षेत्र में इंटरनेट का उपयोग विश्वव्यापी तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से उपयोगी है। पानी-पर्यावरण के विविध पक्षों की जानकारी एवं आंकड़े इंटरनेट पर आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं। पानी-पर्यावरण से संबंधित अनुसंधान, नियोजन और प्रबंधन में इससे प्राप्त जानकारी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।³

सूचना प्रौद्योगिकी का एक नया क्षेत्र मल्टीमीडिया है। इसमें लेखन सामग्री, ध्वनि, वीडियो, द्विआयामी या त्रिआयामी ग्राफिक और एनीमेशन शामिल हैं। इसका उद्देश्य लोगों को एक नियंत्रित ढंग से जानकारी, शिक्षा और मनोरंज प्रदान करना है। इसके माध्यम से जैव विविधता एवं वन्य जीवन पर जानकारी मनोरंजक के साथ शिक्षाप्रद भी बन जाती है। इसके माध्यम से यह लाभ होता है कि यदि वास्तविक दृश्यों पर फिल्म बनाई जाए तो लागत कई गुना आती है, जबकि मल्टीमीडिया से यह कार्य सस्ते में एवं सरलता से सम्पन्न हो जाता है।

सूचना तकनीक एक अधिग्रहण, संग्रहण, मौखिक, चित्रमय, मूल पाठ तथा संख्यात्मक सूचनाओं का प्रक्रम है, जो कम्प्यूटर तथा दूरसंचार के मिश्रण पर आधारित है। यह प्रबंधन तकनीकी का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत प्रक्रिया, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर तथा हार्डवेयर, कार्यक्रम, सूचना तंत्र एवं ज्ञात आंकड़े आते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सूचना तकनीक, बहु-माध्यम वितरण क्रिया-विधि की सहायता से दृष्टि की रूप रेखा में लिए गए आंकड़े, सूचनाएं, ज्ञान आदि का अनुभव है। विस्तार में सूचना तकनीक हार्ड-वेयर तथा सॉफ्टवेयर दोनों हैं, जो सूचनाओं को संग्रहित करने में सहायक है।⁴

पर्यावरण जागरूकता में सूचना तकनीक की भूमिका

आधुनिक सूचना तकनीकी ने फ्रैंसिस बेकन के कथन 'Knowledge is Power' को सच साबित कर दिखाया। सूचना तकनीक एक ऐसी तकनीक है, जो दुनिया में किसी भी व्यक्ति को, किसी भी समय, कहीं भी घटने वाली घटना या प्रसंग के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। सूचना तकनीक के जरिए घर बैठे ही पर्यावरण से संबंधित सभी जानकारियां मिल जाती हैं, आज जैसे किस क्षेत्र में कितना प्रदूषण है, वन्य जीवों की सुरक्षा के क्या इंतजाम है।

देश-विदेश में पर्यावरण संरक्षण हेतु क्या शोध किए जा रहे हैं आदि प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही इन संवेदी उपग्रहों की सहायता से दुनिया भर में हो रही पर्यावरणीय घटनाओं जैसे-ओजोन क्षरण, प्राकृतिक प्रकोप, वन-विनाश इत्यादि से संबंधित सूचनाएं तुरंत ही संसार के विभिन्न भागों में पहुंच जाती हैं। इसके अलावा बहुत सी

छोटी-छोटी घटनाओं की पूर्व सूचना भी विश्व के कोने-कोने में पहुँचाई जा सकती हैं। आज एक आम व्यक्ति इंटरनेट और ई-मेल के जरिए किसी भी क्षेत्र की जानकारी प्राप्त कर सकता है। वर्तमान में पर्यावरण प्रबंधन में भी सूचना तकनीक अहम भूमिका निभा रही है।

पर्यावरणीय एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने एक तंत्र की स्थापना की है, जिसे पर्यावरण सूचना-तंत्र कहा जाता है। इसका मुख्यालय राजधानी दिल्ली में स्थापित किया गया है। पर्यावरण सूचना तंत्र के द्वारा पर्यावरण संबंधी सभी जानकारियां जैसे-प्रदूषण के उपाय, नवीनीकरण ऊर्जा, मुरुस्थलीकरण, जैव विविधता आदि के बारे में जानकारियों को हमेशा के लिए कंप्यूटर में संग्रहित किया जा सकता है। अतः वर्तमान युग में सूचना तकनीक इतनी विकसित हो गई है कि मानव-जीवन का कोई पहलू अब सूचना तकनीक से पृथक नहीं है तथा सूचना तकनीक आधुनिक युग की सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में सूचना तकनीक द्वारा पर्यावरण जागरूकता

पर्यावरण के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता प्रत्येक नागरिक को है, क्योंकि पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। शहरी इलाकों में औद्योगिकरण, शहरीकरण, आधुनिकता आने से पर्यावरण को क्षति तथा पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। साथ ही इन इलाकों में सूचना तकनीक का विकास तेजी से हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ के लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है, हमें आवश्यकता है पर्यावरण जागरूकता की उन ग्रामीण क्षेत्रों में, जो समाज में रहते हुए भी सामाजिक तौर से प्राप्त होने वाली कई सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं।

एक शोध के दौरान दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वे किया गया। दुर्ग जिला शिवनाथ महानदी घाटी के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। यहां की कुल जनसंख्या 28,10,436 (2001 सेंसेस के अनुसार) है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल कुल 8,702 वर्ग किमी है। दुर्ग जिले में कुल 1,821 ग्राम हैं जिनमें से विद्युतिकृत ग्रामों की संख्या 1,775 है। सर्वे में ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के साथ-साथ पानी-पर्यावरण शिक्षण भी अपेक्षाकृत कम देखने को मिली।⁵

ग्रामीण इलाकों में हालांकि पानी-पर्यावरण शिक्षण में वेब-माध्यमों की भूमिका अभी भी अपेक्षाकृत कम देखने को मिली है, लेकिन धीरे-धीरे इंटरनेट की सस्ती-उपलब्धता ने उस परिस्थिति को बदलना शुरू कर दिया है।

मुख्य वेब पोर्टलों की सूची (जो भारत में पानी-पर्यावरण संबंधी ज्ञानाधारित सामग्री उपलब्ध कराते हैं):

1. India Water Portal/Hindi Water Portal	31. Khabar Lahariya
2. WashCost	32. Gram Vaani
3. Akvopedia	33. ENVIS (Environmental Information Center)
4. Oorvani Foundation (Citizen Matters & India Together)	34. Digital Empowerment Foundation
5. Energy Line India	35. Rainfed India
6. SaciWATERS/CAP-NET (South Asia Consortium for Interdisciplinary Water Resources Studies)	36. India Urban Forum
7. Blue Planet Network & Peer Water Exchange	37. Sustainable Sanitation Alliance
8. APFAMGS (Andhra Pradesh Farmer Managed Groundwater Systems Project)	38. Solution Exchange India
9. Pravah	39. India Biodiversity Portal
10. UNICEF India	40. India Environment Portal
11. South Asia Network on Dams, Rivers and People	41. Down to Earth
12. India WASH Forum (IWF)	42. Education Portal
13. SOPPECOM (Society for Promoting Participative Ecosystem Management)	43. India Climate Portal
14. Gateway to Right to Information	44. Women's Web(.in)
	45. Teacher Plus(.org)
	46. The Better India
	47. Kafila
	48. The Alternative(.in)
	49. Digital Green
	50. ICIMOD - (International Centre for Integrated Mountain Development)

15. CDD Society (Consortium for DEWATS Dissemination; DEWATS - Decentralized Wastewater Treatment Systems) 16. Odisha Water Forum 17. Water Initiatives Odisha 18. Forum for Policy Dialogue on Water Conflicts 19. Flow Research Network 20. Water Integrity Network (South Asia Section) 21. Agriculture Information 22. Mahindra's Spark the Rise 23. p.a.l.s. (Pure Air Lovers Society) 24. Jaagore 25. Earthian 26. HUL Do Gooders (Hindustan Unilever Ltd Do Gooders) 27. WBCSD's Water Tool 28. THINK 2013 29. Journalists for Rainwater Harvesting 30. WASH Media South Asia	51. Conservation India 52. Freshwater Action Network 53. India Water Partnership 54. MASS (Mass Education) 55. Centre for Environment and Development 56. Satyamev Jaayate (talk show) 57. Chai with Lakshmi (talk show) 58. Centre for Good Governance 59. Medianama(.com) 60. The Hoot(.org) 61. News Laundry(.com) 62. The Third World(.net) 63. Sanctuary Asia 64. Current Conservation 65. Bombay Naturalist Society 66. My Law(.net) 67. Current Science
---	--

केस-स्टडी : इंडिया वाटर पोर्ट-हिंदी

India हिन्दी
waterportal

Search

SEARCH

मुखपृष्ठ
संगठन ▾
टूल्स और टेक्निक ▾
आंकड़े और संसाधन ▾
नेटवर्क ▾
सुखियां ▾
मस्ट्रीमीडिया ▾
युवाओं के लिए ▾

सेनिटेशन प्रश्न

नया ताजा

परजीवी संक्रमण से मस्य उत्पादन पर गहरी असर प्लास्टिक में पैक भोजन शरीर और पर्यावरण के लिए जहर

मध्यप्रदेश के खजराना से दो मासाब और नदी घाटी

जैविक खेती के लिए छोड़ दी 34 वर्षों की वकालत

वेदों का उपयोग जलवायु परिवर्तन पर आधुनिक संदर्भ में किया जाए

सात हजार लाख लीटर दरसात के पानी की पकड़ी

कसौली : स्वच्छता से गांव में स्वावलंबन

खासम-खास

कॉप 14: मोदी ने कहा सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा देगा भारत

Submitted by HindWater on Mon, 09/16/2019 - 17:06



प्रयास

जैविक खेती के लिए छोड़ दी 34 वर्षों की वकालत

Submitted by HindWater on Mon, 09/30/2019 - 12:39



परियोजना पृष्ठ भूमि और महत्व

इंटरनेट और मोबाइल के लोकप्रिय होने के बाद से ही पानी सहित विभिन्न सेक्टरों में पारदर्शिता लाने, जवाबदेही और सावर्जनिक भागीदारी में सुधार के लिए विकास कार्यों से जुड़े समुदाय में सूचना संचार तकनीकों (आईसीटी) के उपयोग के प्रति रुचि बढ़ गई है। वास्तव में आईसीटी विकास के लिए क्या कर सकता है, हम इसे समझने के शुरुआती चरण में हैं, लेकिन आईसीटी ने फंड ट्रांसफर में तेजी और ज्ञान के फैलाव को तेज गति से समाज तक पहुंचाकर कई शुरुआती सफलताओं में दिखाया है, जो कि हम पहले नहीं कर सकते थे। इंडिया वाटर पोर्टल को भारतीय जल क्षेत्र में ज्ञान पोर्टल (नॉलेज पोर्टल) के रूप में समझा जाता है, क्योंकि यह विकास के लक्ष्य को आगे बढ़ाने

के लिए आईसीटी का उपयोग करता है और विकास के इस उभरते हुए दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

शोध पद्धति और समय सीमा

शोध की पद्धति विश्लेषणात्मक तुलनात्मक, विवेचनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक है। जिसमें वेब आधारित सर्वेक्षण और प्रत्यक्ष साक्षात्कार भी शामिल हैं।

पूरे शोध को विभिन्न कालांशों में भिन्न-भिन्न चरणों में नियोजित किया गया। यह शोध तीन चरणों में बांटा गया।

चरण एक में विभिन्न वेब पेजों और उन पर डाली गई सामग्री का विश्लेषण किया गया।

चरण 2: चरण 2 में संस्थात्मक शोध पर काम किया गया और उसी के साथ यह भी जानने का प्रयास किया गया कि अपनी ज्ञान सामग्री के प्रसार के लिये विभिन्न पोर्टल गैर डिजिटल गतिविधियों को किस प्रकार करते हैं। इसी चरण में पोर्टल पर काम करने वाले विभिन्न प्रतिनिधियों से साक्षात्कार करके यह समझने का भी प्रयास किया गया कि वे पोर्टल की सामग्री, उसके प्रसार और उपयोग के बारे में क्या सोचते हैं।

चरण 3 : तीसरे चरण में पोर्टल टीम से बाहर पोर्टल का प्रयोग करने वाले पाठकों से संपर्क करने का प्रयास किया गया। इसके लिये गूगल एनालिटिक्स और मेल डेटाबेस के माध्यम से उनसे संपर्क किया गया और एक वेब सर्वे तैयार किया गया और उनसे कुछ सवालों के जवाब देने को कहा गया। इसके अतिरिक्त फील्ड में जाकर प्रत्यक्ष साक्षात्कार भी किये गए और जानने का प्रयास किया कि आखिर पोर्टल पर डाली जाने वाली सामग्री उपयोगी है भी या नहीं। यदि हाँ तो वे उसका उपयोग किस प्रकार करते हैं।

तालिका: 1 शोध के विभिन्न चरण और गतिविधियां

<p>Phase 1: <u>Web and Content Analysis</u></p>	<p>Timeline Nov 2013-May 2014 University of California, Santa Barbara</p>	<p>Design & Pilot Webpage User Survey (Nov 2013) Complete Benchmarking Report for the Portal (Nov-Dec 2013) Web Analytics and Content Analysis (Nov 2013-April) Create Interview Schedules /Questions (April 2014)</p>
<p>Phase 2: <u>Institutional Research & Analysis of Non-Digital Outreach</u></p>	<p>Timeline: mid-Aug 2014-mid-Feb 2015 <i>Delhi office (Aug-Oct) Bangalore office (Nov-Feb) Any other necessary locations</i></p>	<p>Complete Web Analytics and Content Analysis work Present initial findings to Arghyam & IWP Learn the processes of information & data collection and dissemination at the Portal (including a visit to other locations) Interviews with a sample of the IWP & Arghyam team Work/Intern for the Portal in order to learn the organizational culture that supports its work (For this, I could deepen research on penetration or work on a project of your choosing) Analyze the Portal's non-digital outreach through attendance interviews. Build sample for reception/penetration interviews</p>
<p>Phase 3: <u>Reception Research with IWP Users (3-4 months)</u></p>	<p>mid-Feb-May 2015 (at least) <i>Bangalore & Key Sites of IWP User Reception</i></p>	<p>Interviews with a Sample of IWP Users</p>

नोट: वेब एनालिटिक्स, कंटेंट एनालिसिस और विभिन्न साक्षात्कारों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि लोग सबसे ज्यादा क्या पसंद करते हैं और वे उस सामग्री तक कैसे पहुंचते हैं। इन चरणों के नमूनों को इस प्रकार बनाया गया ताकि न केवल पाठकों की विविधता को समझा जा सके बल्कि वे उस सामग्री को कैसे प्राप्त और स्वीकार करते हैं।

स्रोत

शोध मुख्य रूप से प्राथमिक स्रोतों पर आधारित है

वेब एनालिटिक्स

कंटेंट एनलिसिस

वेब सर्वे

प्रत्यक्ष साक्षात्कार

शोध प्रश्न और परियोजना विवरण

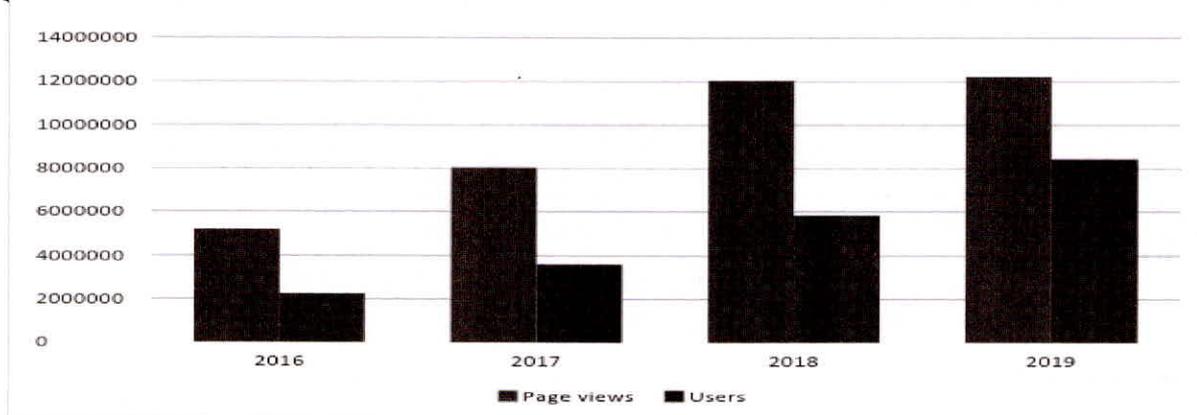
शोध के दौरान पूछे जाने वाले प्रश्नों से हम जानने की कोशिश कर रहे थे कि:

- कौन-सी संगठनात्मक संस्कृति (दिन-प्रतिदिन की तैयारी, आंतरिक संचार और संगठनात्मक संरचना) और सार्वजनिक संदेश के कार्य पोर्टल को विकास संस्थान के लिए ज्ञान के रूप में शिक्षात्मक बनाते हैं?
- भारत के जल क्षेत्र में एक प्रमुख सूचना पोर्टल और एनजीओ के रूप में इंडिया वाटर पोर्टल भारतीय समाज, इसकी जल जरूरत और बेहतर भविष्य के लिए किन तकनीकों का उपयोग करता है?
- प्रभावशाली होने के लिए पोर्टल को व्यापक स्तर पर देखा और जाना जाना चाहिए। इसी प्रकार यह भी पूछा गया कि वे कौन से साधन हैं जिनके माध्यम से पोर्टल सबसे अधिक सार्वजनिक दृश्यता प्राप्त करता है? (और उनमें से प्रत्येक के माध्यम से पोर्टल किसके लिए दिखाई दे रहा है?)
- पोर्टल पर कंटेंट कैसे बनाया/लिखा और प्रकाशित किया जाता है?
- पोर्टल पर साझा की जाने वाली ज्ञान सामग्री के पाठक कौन हैं?
- पाठक पोर्टल द्वारा दी गई सूचनाओं और ज्ञान का उपयोग कैसे करते हैं?

इंडिया वाटर पोर्टल पर संदर्भ सामग्री संबंधित कुछ आंकड़े

Total Content- (Round Figure= 64700)						
Books	Presentations	Audio & Videos	Glossary	Organisation database	Success Stories	IEC content
Approx 300	Approx 400	Approx 500	Approx 20,000	Approx 8,000	Approx 340	Approx 400

इंडिया वाटर पोर्टल की संदर्भ सामग्री का लोगों द्वारा उपयोग के कुछ आंकड़े (दिए गए 0.5 वर्षों की)



सर्वे के कुछ सवालों के निष्कर्ष

- 1-5 के स्केल पर, जितनी बार आप इंडिया वाटर पोर्टल (हिन्दी) पर आई/आए, इंडिया वाटर पोर्टल (हिन्दी) की सूचना आपके लिए कितनी उपयोगी रही?

Answer Choices	Responses	
5 (बहुत ही उपयोगी, यह अपरिहार्य/अद्भुत है)	23.76%	24
4 (बहुत उपयोगी)	25.74%	26
3 (उपयोगी)	15.84%	16
2 (उपयोगी लेकिन सिर्फ थोड़ा सा)	8.91%	9
1 (उपयोगी नहीं है)	1.98%	2
पता नहीं, यह मेरी पहली बार है	23.76%	24
Total		101

- आपको इंडिया वाटर पोर्टल (हिंदी) की वेबसाइट का/की कौन-सा/से भाग सबसे कम उपयोगी लगता है/लगते हैं? (आप एक से ज्यादा चुन सकते हैं)

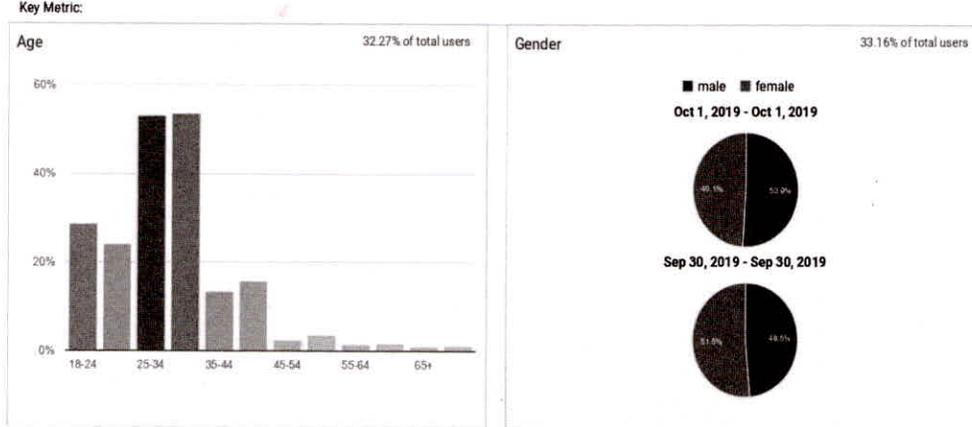
Answer Choices	Responses	
मुखपृष्ठ	11.29%	7
संगठन	9.68%	6
टूल्स और टेक्निक	1.61%	1
आंकड़े और संसाधन	3.23%	2
नेटवर्क	1.61%	1
सुर्खियां	8.06%	5
मल्टीमीडिया	6.45%	4
युवाओं के लिए	9.68%	6
सेमिनटेशन	3.23%	2
प्रश्न पृष्ठिये	11.29%	7
सिर्च	9.68%	6
Latest	3.23%	2
प्रयास	8.06%	5
खास-खास	1.61%	1
जल संगठन गति विधियां	11.29%	7
नोटिस बोर्ड	0.00%	0
आगामी कार्यक्रम	4.84%	3
जॉब/नौकरी	17.74%	11
रेडियो पर पानी की बातें	14.52%	9
नदियों के नाम से और राज्यवार खबरें दूढ़ें?	11.29%	7
Most read articles	8.06%	5
सेमिनटेशन/साफ-सफाई	8.06%	5
कोई अन्य	16.13%	10
Total Respondents: 62		

सर्वे के निष्कर्ष

विभिन्न पोर्टलों के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकला कि पानी पर्यावरण के मुद्दों को लेकर हिंदी इंडिया वाटर पोर्टल की स्वीकार्यता लोगों के बीच तेजी से बढ़ी है। वेब एनालिटिक्स, प्रयोक्ता सर्वेक्षण, और विभिन्न साक्षात्कारों के माध्यम से एक विस्तृत और विशिष्ट रिपोर्ट भी निकल कर आई कि विभिन्न प्रयोगकर्ताओं के सामग्री को स्वीकार करने और इस्तेमाल करने की विभिन्न पद्धतियां क्या हैं।

हिंदी इंडिया वाटर पोर्टल का पानी-पर्यावरण शिक्षण में योगदान : (गूगल एनालिटिक्स के आधार पर)

हिंदी वाटर पोर्टल की बढ़ती लोकप्रियता से स्पष्ट है कि पाठक इसे पसंद करने के साथ-साथ उपयोगी भी मानते हैं। हमारे शोध में शामिल किए गए साक्षात्कारों से स्पष्ट होता है कि पोर्टल को पानी-पर्यावरण के मुद्दों पर विश्व को सबसे बड़ा और विश्वसनीय पोर्टल माना जा रहा है। भारत में इसका उपयोग करने वाले लोगों में विभिन्न प्रकार के लोग शामिल हैं। जैसे किसान, मीडिया, अकादमिक, प्रशासनिक, सरकारी, गैर-सरकारी, जमीन पर काम करने वाले कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में छात्र इस पोर्टल के मुख्य पाठक हैं। गूगल एनालिटिक्स के आंकड़े दर्शाते हैं कि इसका उपयोग पुरुष और महिलाएं समान रूप से करते हैं।



गत विभिन्न वर्षों में पोर्टल का इस्तेमाल अहम नीतिगत मामलों में निर्णय लेने के लिये किया गया है और आज भी किया जा रहा है। किसान लोग पोर्टल की सामग्री से प्रेरणा प्राप्त करके अपने खेती के तरीकों में बदलाव और सुधार ला रहे हैं, साथ ही जल संरक्षण के कामों को बढ़ावा मिला है। पोर्टल ने जमीन पर जन शक्ति को जोड़कर ज्ञान द्वारा जल शक्ति के अभियानों में जोड़ने का प्रयास किया है।

पोर्टल के माध्यम से ही विभिन्न छोटे संगठनों और आंदोलनों को एक आवाज और पहचान मिली है। बहुत से मुद्दों पर न केवल दृष्टिकोण और नजरिया स्पष्ट करने का प्रयास किया है बल्कि दूर-दराज के इलाकों में गुमनाम हीरो की तरह काम करने वाले लोगों की सफल कहानियों को इस मंच द्वारा अधिकतम लोगों तक पहुंचाने का प्रयास भी किया है। हिंदी इंडिया वाटर पोर्टल आज न केवल भारत में बल्कि विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों में भी छात्रों और शिक्षकों के बीच लोकप्रिय हो रहा है।

निष्कर्ष

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का शिक्षा में प्रभाव के पश्चात अब मैं बताना चाहूंगा कि आज पर्यावरण की दशा इतनी दयनीय हो चुकी है कि प्रत्येक नागरिक को पर्यावरण के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। क्योंकि हमें ये ज्ञात होना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार साल 2018 में करीब 4857 सेटेलाइट आकाश (अंतरिक्ष) में थे। इनमें से करीब 2600 अब कार्यरत भी नहीं हैं इसके फलस्वरूप वहां आकाशीय कचरा निर्मित हो रहा है। समय के साथ ये नीचे भी आयेंगे और पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश के दौरान अत्यधिक तापमान व घर्षण से नष्ट भी हो जाएंगे। वह दिन दूर नहीं जब हमें अंतरिक्ष में भी प्रदूषण की समस्या से जूझना पड़ेगा।

इन सबके बावजूद दूसरी तरफ सूचना और तकनीक के माध्यम से सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं। वर्तमान में संसार के सभी क्षेत्रों में विकास एवं उन्नति संभव हो पाई है। सूचना तकनीक को समाज के विकास का मूल स्रोत कहा जा सकता है। सूचना तकनीक पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण के प्रति जागरूकता में भी अहम भूमिका निभा रही है। इसलिए आज के समाज को तकनीकी समाज कहा जाना उचित होगा। यदि इसी प्रकार सूचना तकनीक के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण शिक्षा का विकास होता रहा तो हम पर्यावरण, जो मानव जीवन का आधार है, को संरक्षित कर आने वाली पीढ़ियों को इसके लाभ एवं महत्व से अवगत करा सकते हैं। इस उद्देश्य को पूरा करते हुए इंडिया वाटर पोर्टल हिन्दी ने पानी-पर्यावरण के संबंध में एक मुकाम हासिल किया है।

Referance

- <http://smitamishr.blogspot.com/>
- गूगल एनालिटिक्स की रिपोर्ट
- <https://gwaliortimes.wordpress.com>
<https://gwaliortimes.wordpress.com>
Krishnakant Dube, <https://hindi.indiawaterportal.org/node/47125>
https://govinduikey.blogspot.com/2019/03/blog-post_12.html